विश्व शांति के लिए जरूरी है प्रत्येक मन की शांति–प्रजापिता ब्रह्मा

18 जनवरी 42 वीं पुण्य तिथि पर विशेष प्रकाशनार्थ

किसी भी सुन्दर समाज और खुशहाल जीवन का संदेश उसके कर्म से मिल रहे शांति और सौहार्द्र की भासना में निहित होती है। इस तरह की भासनायें और प्यार ही विश्व शांति तथा लोगों के परिवर्तन की नींव रखने का आधार बनती है। दुनियां के सभी समाज सेवी, धर्म सुधारक, धर्म संस्थापक, आध्यात्म नेता तथा महापुरूषों का यही प्रयास रहा है कि पूरे विश्व में शांति रहे और एक ऐसे समाज की स्थापना हो जिससे मानव समाज अपनी उच्च स्थिति को प्राप्त कर सके। इसी संदेश को वैश्विक स्तर पर फैलाने तथा पूरे विश्व में अमन–शांति के पैगाम को फैलाने के पुनित कार्य के लिए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा में लगा दिया। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा यह अच्छी तरह जानते थे कि यदि विश्व में शांति की स्थापना करनी है तो उसके लिए जरूरी है कि सभी मनुष्यों के अन्दर शांति का बीजारोपण हो। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य से फैलने वाले शांति, प्रेम और आनन्द का प्रकाश ही लोगों की जिंदगी में बदलाव लायेगा तथा एक नयी दुनियां की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करेगा।

इस महान सोच के पुरोधा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा उन सभी वर्जनाओं को तोडने का प्रयास किया जो व्यक्ति को जाति धर्म और रंगों के आधार पर विभाजित करते हैं। यही कारण रहा कि उनके द्वारा गुणों से सुसज्जित लगाया गया पौधा आज वट वृक्ष की भाति फैल चुका है और दुनियां के तमाम मुल्कों में लोग अपनी आंतरिक स्थिति को दिव्य बना रहे हैं। वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा का नामकरण भी स्वयं सुप्रीम अथारिटी की थी। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के बचपन का नाम दादा लेखराज था। वे बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा मानवीय शरीर में दिव्य आत्मा की झलक थी। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का जन्म सन् 1876 में सिन्ध प्रांत (अभी पाकिस्तान में है) के एक कुलीन और साधारण परिवार में हुआ। बचपन में ही इनके माता का देहान्त हो गया। इनके बचपन का नाम लेखराज था। जरूरतमंत लोगों की हर स्थिति में मदद करना इनके व्यक्तित्व में शुमार था। ईश्वर की अराधना केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए होती थी। लेखराज बचपन से इतने सौम्य और असाधारण थे कि इन्हें लोग प्यार से दादा कहते थे। दादा ने बड़े होकर हीरे–जवाहरातों के व्यापार में लग गये। देखते ही देखते इनके व्यापार की ख्याति भारत सहित आस–पास के कई देशों में फैल गयी। इनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि जो कोई भी एक बार मिलता तो उन्हीं का हो जाता। कई राजायें तथा महाराजायें यहाँ तक कहते कि लेखराज जी राजा तो आप को होना चाहिए। परन्तु दादा सदैव मानवीय सेवाओं की बात करते। कई बार दादा को मनुष्यात्माओं की पीड़ा परेशान करती और वे मन ही मन सोचते कि कैसे इस संसार का उद्धार होगा, जिसमें लोग सुखी और सम्पन्न हों।

बाबा के जीवन में उस समय महान परिवर्तन आया जब वे उम्र के अर्धशतक साठ साल की में उन्हें अपने मित्र के घर वाराणसी में रात्रिकालीन हुए पुरानी दुनिया के विनाश तथा नयी दुनिया की स्थापना के दृश्य में उनके जीवन को बदल कर रख दिया तथा वैराग्य की ऐसी लौ जगायी कि उन्हें हीरे जवाहरात के व्यापार कौडियों मिशल लगने लगे। इसके सारी आशंकाओं को दूर करते हुए स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने अपना सम्पूर्ण परिचय दिया तथा नयी दुनिया बनाने के महान कार्य का दायित्व सौपा। यही से प्रारम्भ हुआ नयी दुनिया के बनाने का दास्ता। बाबा ने अपनी चल और अचल सम्पत्ति बेचकर एक टस्ट की स्थापना की। जिसमें माताओं बहनों को आगे रख समाज के बदलाव की प्रक्रिया का आगाज किया। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद यह संस्था राजस्थान के माउण्ट आबू आयी तथा पूरे देश विदेश में मानवीय सेवाओं का दौर प्रारम्भ हुआ। इस कारवा में सभी धर्मों, सम्प्रदायों के लोगों ने भागीदार बनकर इसे बढाने में दिन रात लगनशील रहे तथा परमात्मा के आदेशानुसार स्वय परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की मुहिम में अपने आपको समर्पण कर दिया।

बाबा ने परमात्मा शिव की स्मृति से स्वयं को विकारों के अंश से भी मुक्त कर आत्मा को सम्पूर्ण सतोप्रधान बनाने में सफल हुए तथा फरिश्ता स्थिति को प्राप्त किये। बाबा ने अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करते हुए 18 जनवरी, 1969 को अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। बाबा स्थूल रुप से तो हमारे बीच नहीं है परन्तु उनकी सूक्ष्म उपस्थिति आज भी हमें काल के तरफ बढ रही दुनिया में नयी दुनिया की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। बाबा ने 75 वर्ष जो मानवता का बीज बोया था आज वह वट वृक्ष का रुप ले चुका है। आज धर्म और जाति की सीमाओं को तोडते हुए लाखों लोगों ने अपने अन्दर मानवीय मूल्यों का समावेश कर दैवी गुणों के तरफ अग्रसर है। ऐसे में आने वाले समय नयी दुनिया का स्पष्ट संकेत सामने दिखने लगे हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की 42वीं पुण्य तिथि को विश्व शांति दिवस के रुप में मना रहे है। 95 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी इस संस्थान की वर्तमान में मुखिया है। जिनके निर्देशन में करीब 45 हजार युवा बहनें विश्व परिवर्तन की मुहिम में सम्पूर्ण रुप से समर्पित है। दुनिया के 137 मुल्कों में आठ हजार पांच सौ से भी ज्यादा कार्यक्रम आयोजित कर अमन, चैन तथा साम्प्रदायिक सौहार्द्र के लिए सामूहिक ध्यान साधना आयोजित किये जायेंगे। इस महान विभूति के इस पुण्य तिथि पर हम शत् शत् नमन करते है।